बिंदु मिलाओ

रंग भरो

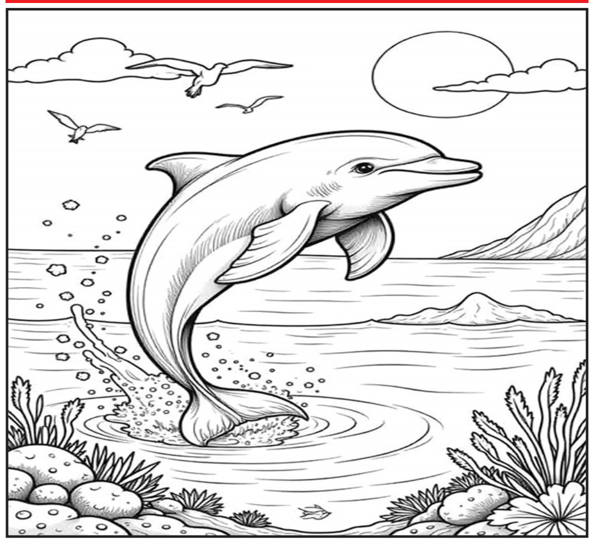

कहानी

चींटी और टिड्डे की कहानी

एक सुंदर जंगल के किनारे एक मेहनती चींटी रहती थी. उसका नाम चिंकी था. उसी जंगल में एक टिड्डा भी रहता था, जिसका नाम टिम्मी था. चिंकी बहुत मेहनती थी, जबकि टिम्मी को सिर्फ गाना गाना, खेलना और मस्ती करना पसंद था.

गर्मी का मौसम शुरू हो चुका था. चिंकी सुबह-सुबह उठ जाती और भोजन इकट्ठा करने निकल पड़ती. वह गेहूँ के दाने, चावल के छोटे टुकड़े और सूखे फल अपने बिल में जमा करती रहती. उसे पता था कि कुछ महीनों बाद सर्दियाँ आएँगी और तब भोजन मिलना कठिन हो जाएगा. दूसरी ओर टिम्मी दिनभर पेड़ की डाल पर बैठकर गाने गाता रहता. वह जंगल के दूसरे जानवरों के साथ खेलता, कूदता-फाँदता और समय बिताता. एक दिन टिम्मी ने चिंकी को भारी दाना उठाते देखा. वह हँसते हुए बोला, अरे चिंकी! तुम हमेशा काम ही करती रहती हो. थोड़ा आराम भी कर लिया करो. देखो, मौसम कितना सुहावना है. चिंकी मुस्कुराई और बोली, टिम्मी, आज मेहनत करूँगी तो कल आराम से रहूँगी. सर्दियाँ आने वाली हैं.

टिम्मी ने उसकी बात को मजाक समझा और फिर गाना गाने लगा. दिन बीतते गए. चिंकी लगातार मेहनत करती रही. कभी तेज धूप होती, कभी बारिश की हल्की फुहारें पड़तीं, लेकिन उसने अपना काम नहीं छोड़ा. उसका बिल धीरे-धीरे भोजन से भरने लगा. एक दिन जंगल में रहने वाले बूढ़े उल्लू ने टिम्मी को समझाया, बेटा, समय बहुत कीमती होता है. जो आज का काम कल पर छोड़ता है, वह अक्सर पछताता है. लेकिन टिम्मी ने कहा, उल्लू दादा, चिंता मत कीजिए. अभी बहुत समय है. उल्लू दादा ने सिर हिलाया और उड़ गए. कुछ ही हफ्तों बाद मौसम बदलने लगा. ठंडी हवाएँ चलने लगीं. पेड़ों के पत्ते झड़ने लगे और जंगल में भोजन कम होने लगा.

चिंकी अपने बिल में आराम से थी क्योंकि उसके पास खाने का पर्याप्त सामान था. लेकिन टिम्मी के सामने समस्या खड़ी हो गई. उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिल रहा था. उसने इधर-उधर बहुत खोजा, लेकिन हर जगह निराशा ही मिली. एक दिन भूखा-प्यासा टिम्मी जंगल में घूम रहा था. उसकी ताकत भी खत्म होने लगी थी. तभी उसे चिंकी का बिल याद आया. वह धीरे-धीरे चिंकी के पास पहुँचा और बोला, मित्र, क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो? मुझे बहुत भूख लगी है. चिंकी ने उसे देखा. वह समझ गई कि टिम्मी अपनी गलती का परिणाम भुगत रहा है. उसने कहा कि टिम्मी, जब मैं मेहनत कर रही थी, तब मैंने तुम्हें भी समझाया था. टिम्मी शर्मिंदा होकर बोला, हाँ, मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी. मुझे लगा था कि समय कभी खत्म नहीं होगा. अब मुझे अपनी गलती समझ में आ गई है.

चिंकी का दिल दयालु था. उसने टिम्मी को अपने बिल में बुलाया और उसे भोजन दिया. टिम्मी ने कई दिनों बाद पेट भरकर खाना खाया. खाना खाने के बाद उसने कहा, तुमने मेरी मदद की, इसके लिए धन्यवाद. मैं वादा करता हूँ कि अब कभी आलस नहीं करूँगा. सर्दियों के बाकी दिन टिम्मी ने चिंकी की मदद की. वह बिल की सफाई करता, दाने व्यवस्थित रखता और उससे बहुत कुछ सीखता.

जब अगली गर्मियाँ आईं, तो इस बार टिम्मी पहले की तरह नहीं था. वह सुबह जल्दी उठता और चिंकी के साथ भोजन इकट्ठा करता. दोनों मिलकर मेहनत करते और भविष्य की तैयारी करते.

कुछ समय बाद जंगल के सभी जानवरों ने देखा कि टिम्मी अब जिम्मेदार और मेहनती बन गया है. बूढ़े उल्लू ने मुस्कुराते हुए कहा, देखा, मेहनत और अनुभव सबसे बड़े शिक्षक होते हैं.

टिम्मी ने जवाब दिया, सही कहा दादा. अगर मैंने समय की कीमत पहले समझ ली होती, तो मुझे इतनी परेशानी नहीं झेलनी पड़ती.

उस दिन से चिंकी और टिम्मी अच्छे दोस्त बन गए. दोनों मेहनत करते, एक-दूसरे की मदद करते और खुशी से रहने लगे.

सीख

समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति कभी परेशान नहीं होता. मेहनत, योजना और दूरदर्शिता सफलता की कुंजी हैं.

प्रेरक प्रसंग

भारत के महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह

भगत सिंह भारत के सबसे महान और साहसी स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे. उनका जन्म 28 सितंबर 1907 को पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा गांव (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था. उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था. उनके परिवार के कई सदस्य स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए थे, जिससे उनमें बचपन से ही देशभक्ति की भावना विकसित हुई. उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लाहौर के डी.ए.वी. स्कूल से प्राप्त की. वर्ष 1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने देश को आज़ाद कराने का संकल्प लिया.

प्रारंभ में वे महात्मा गांधी के आंदोलनों से प्रभावित थे, लेकिन बाद में क्रांतिकारी विचारधारा की ओर आकर्षित हुए. वर्ष 1926 में उन्होंने नौजवान भारत सभा की स्थापना की और बाद में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य बने. वर्ष 1928 में साइमन कमीशन के विरोध के दौरान हुए लाठीचार्ज में लाला लाजपत राय घायल हुए और बाद में उनका निधन हो गया. उनकी मृत्यु का बदला लेने के लिए भगत सिंह और उनके साथियों ने ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जे. पी. सॉन्डर्स की हत्या कर दी.

8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधानसभा में बम फेंका, जिसका उद्देश्य किसी की हत्या करना नहीं बल्कि अंग्रेज सरकार का ध्यान आकर्षित करना था. बम फेंकने के बाद उन्होंने स्वयं गिरफ्तारी दी और 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाए. जेल में रहते हुए उन्होंने भारतीय कैदियों के अधिकारों के लिए लंबी भूख हड़ताल की और समाजवाद, राजनीति तथा इतिहास का गहन अध्ययन किया. ब्रिटिश सरकार ने उन पर लाहौर षड्यंत्र केस के तहत मुकदमा चलाया और उन्हें राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी की सज़ा सुनाई.

अंततः 23 मार्च 1931 को लाहौर सेंट्रल जेल में तीनों वीर क्रांतिकारियों को फाँसी दे दी गई. मात्र 23 वर्ष की आयु में शहीद हुए भगत सिंह आज भी अपने साहस, देशभक्ति और बलिदान के कारण भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं.

रोचक तथ्य

सबसे पुराना पिरामिड- मिस्र का पहला पिरामिड साक्कारा में जोसेर का कदम पिरामिड है, जो लगभग 2630 ईसा पूर्व में बनाया गया था.

ग्रेट पिरामिड की ऊंचाई- गीजा का ग्रेट पिरामिड एक समय 146.5 मीटर ऊंचा था, जो आज भी अपनी भव्यता से प्रभावित करता है.

निर्माण का समय- ग्रेट पिरामिड को बनाने में लगभग 20 साल लगे, जो उस समय की मेहनत और तकनीक का प्रतीक है.

पत्थरों की संख्या- इसमें लगभग 2.3 मिलियन पत्थर ब्लॉक इस्तेमाल हुए, जिनका वजन प्रत्येक 2.5 टन तक था.

दक्षिणी गोलार्ध का संकेत- ग्रेट पिरामिड का निर्माण इस तरह हुआ कि यह दक्षिणी गोलार्ध की ओर इशारा करता है, जो खगोलीय ज्ञान को दर्शाता है.

सटीक दिशा- यह पिरामिड चारों दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम) में बिल्कुल सटीक रूप से संरेखित है, जो प्राचीन इंजीनियरिंग का चमत्कार है.

शवों का संरक्षण- पिरामिडों में फारो के शवों को ममी बनाकर रखा जाता था, ताकि वे बाद के जीवन में सुरक्षित रहें.

कामगारों की मेहनत- इन पिरामिडों को बनाने वाले लोग गुलाम नहीं, बल्कि प्रशिक्षित मजदूर थे, जो सम्मान के साथ काम करते थे.

आंतरिक जटिलता- ग्रेट पिरामिड के अंदर गुप्त मार्ग और कक्ष हैं, जिनका उद्देश्य आज भी रहस्य बना हुआ है.

तापमान नियंत्रण- पिरामिड के अंदर का तापमान हमेशा 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है, चाहे बाहर का मौसम कुछ भी हो.

सबसे बड़ा पिरामिड- खुफु का पिरामिड मिस्र का सबसे बड़ा पिरामिड है, जिसका आधार क्षेत्र 13 एकड़ में फैला है.

सुदान में भी पिरामिड- मिस्र के अलावा सुदान में भी लगभग 220 पिरामिड हैं, जो मिस्र से अधिक संख्या में हैं.

खगोलीय संबंध- कुछ विद्वानों का मानना है कि पिरामिड सितारों के संरेखण के आधार पर बनाए गए थे, जैसे ओरियन बेल्ट.

चोरी का इतिहास- अधिकांश पिरामिड लुटेरों द्वारा खाली कर दिए गए, जिससे उनके खजाने गायब हो गए.

भूल भुलैया

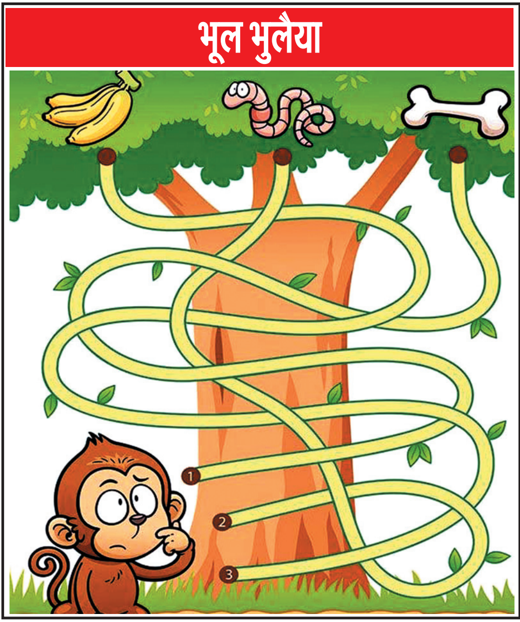

जानकारी

भारत का राष्ट्रीय पक्षी और प्रकृति की अद्भुत सुंदरता का प्रतीक मोर

मोर दुनिया के सबसे सुंदर और आकर्षक पक्षियों में से एक माना जाता है. अपनी रंग-बिरंगी चमकदार पूंछ, मनमोहक नृत्य और शानदार रूप के कारण यह सदियों से लोगों का ध्यान आकर्षित करता आया है. भारत में मोर को विशेष सम्मान प्राप्त है और इसे राष्ट्रीय पक्षी का दर्जा दिया गया है. यह पक्षी न केवल प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य और धार्मिक परंपराओं में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है. वर्षा ऋतु के दौरान जब मोर अपने पंख फैलाकर नृत्य करता है, तो उसका दृश्य अत्यंत मनोहारी और आनंददायक होता है.

यह मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है. नर मोर अपने लंबे, रंगीन और आकर्षक पंखों के लिए प्रसिद्ध होता है, जबकि मादा को मोरनी कहा जाता है और उसके पंख अपेक्षाकृत साधारण होते हैं. मोर की चमकीली नीली गर्दन और हरे-नीले रंगों से सजी पूंछ उसे अन्य पक्षियों से अलग पहचान देती है. मोर सर्वाहारी पक्षी है. यह अनाज, बीज, फल, कीड़े-मकोड़े और छोटे जीवों को भोजन के रूप में ग्रहण करता है. खेतों और जंगलों में पाए जाने वाले हानिकारक कीटों को खाकर यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायता करता है. यही कारण है कि किसान भी इसे लाभदायक पक्षी मानते हैं.

भारतीय संस्कृति में मोर का विशेष महत्व है. कई धार्मिक कथाओं और चित्रों में मोर का उल्लेख मिलता है. भगवान कार्तिकेय का वाहन मोर माना जाता है, जबकि भगवान कृष्ण के मुकुट में मोर पंख का विशेष स्थान है.

कविता

फूल खिले हैं बगिया में

फूल खिले हैं बगिया में,
रंग-बिरंगे दुनिया में.

लाल, गुलाबी, पीले-
नीले,
सब लगते हैं कितने
रंगीले.

मीठी-मीठी खुशबू लाते,
भौंरे भी गुनगुनाते.

तितली रानी पास
में आती,
फूलों संग मुस्काती
जाती.

हम भी इनसे सीखें प्यारे,
सबसे मिलकर रहें
दुलारे.

फूलों जैसे बनें महान,
फैलाएँ खुशियों की
मुस्कान.

बूझो तो जानें

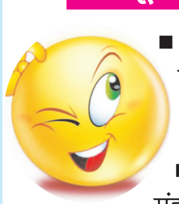

- रोज रात को वो आते हैं, बिना कुछ चुराए ही चले जाते हैं.

  उत्तर-तारे

- लाल शरीर और काला मुंह है, कागज वो खा जाता है. हर शाम पेट खोलकर कागज को कोई ले जाता है.

  उत्तर- पोस्ट बॉक्स

- एक पक्षी और रंग तीन, आसमान में उड़ान भरते देते सबको सुकून.

  उत्तर-भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

- एक राजा की गजब है रानी, दुम के रास्ते वो पीती है पानी.

  उत्तर- दीपक

- तीन आदमी नदी में नहाने जाते हैं. जब बाहर आते हैं, तो उनमें से सिर्फ दो ही के बाल गीले थे, तीसरे के नहीं, सोचो कैसे?

  उत्तर- तीसरे व्यक्ति के सिर पर बाल ही नहीं थे.

हंसी-ठिठोली

- टीचर: बताओ बिजली कहाँ से आती है?
  पप्पू: सर, घर वाले बिल देखकर!
- टीचर: बताओ, बिल्ली पेड़ पर क्यों चढ़ती है?
  पप्पू: सर, क्योंकि नीचे इंटरनेट नहीं होता!
- गाय: मैं दूध देती हूँ.
  पप्पू: हाँ, और हम उसे चाय में डालकर जादू करते हैं!
- पप्पू: मम्मी, आज तो बहुत गर्मी है.
  मम्मी: पानी पी लो.
  पप्पू: नहीं मम्मी, मैं प्यासा नहीं हूँ, सिर्फ़ गर्मी महसूस कर रहा हूँ!
- टीचर: अगर पृथ्वी से सूरज दूर चला जाए तो क्या होगा?
  स्टूडेंट: सर, छुट्टी
- टीचर: बताओ, बिल्ली चूहा क्यों पकड़ती है?
  स्टूडेंट: सर, वो भी स्कूल की तरह टेस्ट देती है!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें .**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें .

उत्तर- 1. बीच बॉल में अंतर , 2. केकड़ा गायब , 3. चश्मा लग हुआ अनानास, 4. चश्मा, 5. तालाब में नाव, 6. चित्र में किला नहीं